AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
कुमार सौरभ
शोधार्थी
शिक्षा संकाय

डॉ. निशा चंदेल
शोध पर्यवेक्षिका
शिक्षा संकाय
संस्कृति विश्वविद्यालय
मथुरा, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध में सिवान जिला के सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। शोध के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों को चुना गया जिनमें से 50 सरकारी एवं 50 गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी थे। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वयं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रश्नवाली का निर्माण किया गया। आँकड़ो के विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की क्या स्थिति है, इसके विभिन्न उद्देश्यों तदोपरान्त परिकल्पनाओं के आधार पर यह शोधकार्य को आगे बढ़ाया गया। शोध विश्लेषण के बाद यह पता लगा कि सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। सिवान जिला के गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में बेहतर है।

मुख्य शब्द

विद्यालय, विद्यार्थी, शिक्षा, शैक्षिक उपलब्धि.

परिचय

शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करती है। कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहते है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों में प्राथमिक शिक्षा विकास के उद्देश्यों में उस माँ के समान है जो अंगुली पकड़कर बच्चे को न केवल चलना सीखाती है बल्कि प्रथम बार में उसमें आत्मविश्वास को रोपित करती है। प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक शिक्षा प्रथम अनिवार्यता की वस्तु है। यह पहली सीढ़ी है जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचता है। कहा जाता है कि राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ठ सम्बन्ध प्राथमिक शिक्षा का है, उतना माध्यमिक शिक्षा या उच्च शिक्षा का नहीं है। प्राथमिक शिक्षा का राष्ट्रीय विचारधारा और चरित्र निर्माण में बहुत योगदान है।

शैक्षिक उपलब्धि वे हैं, जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। ऐसा देखा गया कि विद्यालय आकर्षक योजनाओं एवं शैक्षिक कार्यक्रमों पर सरकार के द्वारा व्यय करने के बावजूद भी इन विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में कम होती है।

उद्देश्य

1. सिवान जिला के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. सिवान जिला के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
4. सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
5. सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
6. सिवान जिला के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्रा एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
7. सिवान जिला के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्रा एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

H_{01} सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होगा।

H_{02} सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होगा।

H_{03} सिवान जिला के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

H_{04} सिवान जिला के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन की सार्थकता

प्राथमिक विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा से औपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ होता है तथा कहा जाता है, कि प्राथमिक शिक्षा से ही शिक्षा रूपी घर की नींव रखी जाती है। प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक शिक्षा प्रथम अनिवार्यता की वस्तु है, यह पहली सीढ़ी है, जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 के अनुसार देश के 14 वर्ष की उम्र के समस्त बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था की गयी है। इस उद्देश्य की प्राप्ति तथा प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के लिए शासकीय स्तर पर अनेक विद्यालय खोले गये तथा योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति कर शिक्षा देने की उचित व्यवस्था की गयी है। प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की जड़ स्वीकार करते हुए सरकार ने बच्चों में प्राथमिक शिक्षा के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए अनेक प्रयास किये जिनमें प्रमुख हैंः दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), आचार्य राममूर्ति शिक्षा समिति (1990), जनार्दन रेड्डी शिक्षा समिति (1992), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (1994), मध्याह्न भोजन येाजना (1995), (संशोधित 2004), सर्व शिक्षा अभियान (2001)। इन सभी योजनओं/आयोगों/समितियों/कार्यक्रमों/अभियानों के अतिरिक्त अन्य प्रयासों द्वारा भी प्राथमिक शिक्षा की दिशा और दशा सुधारने का भरसक

प्रयास किया गया। इन सभी प्रयासों में सबसे महत्वपूर्ण प्रयास प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क बनाने की दिशा में किया गया प्रयास है।

इसके अतिरिक्त सभी बच्चों को मध्याह्न भोजन कार्यक्रम (विश्व का सबसे बड़ा कार्यक्रम) के द्वारा निःशुल्क भोजन, पाठ्य पुस्तक एवं परिधान दिया जाता है। इसके साथ ही साथ गरीब तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों को अलग से छात्रवृत्ति दी जाती है।

उपरोक्त अध्ययनों से यह बात उजागर हुई है, कि संसाधन से बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि से बालकों के अभिलाषा स्तर पर प्रभाव पड़ता है। सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं।

जबकि गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को सरकार द्वारा किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाती है। ये विद्यालय समाज के विभिन्न संगठनों या व्यक्ति विशेष द्वारा संचालित होते है। इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण नवाचारों से वंचित रहते हैं, और न ही उन्हें ज्यादा वेतन दिया जाता है।

वित्तीय अनुदान, प्रशिक्षित शिक्षक, अधिगम सामग्री इत्यादि प्राप्त होने के बावजूद क्या कारण है, कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी ज्यादा प्रतिभाशाली, चुस्त एवं बुद्धिमान देखे जाते हैं, इसकी सत्यता की परख करने हेतु, शोधकर्ता ने उपरोक्त दोनों प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने का निश्चय किया।

शोध विधि

शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा शोध विधि के लिए वर्णात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

जनसंख्या

सिवान जिला के प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में शामिल किया गया है।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के रूप में सिवान जिला के 2 सरकारी एवं 2 गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध सीमांकन

1. यह शोध कार्य सिवान जिला के सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
2. यह शोध कार्य सिवान जिला के 4 प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
3. यह शोध कार्य कक्षा 5 में पढने वाले विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

निष्कर्ष

शोधकर्ता ने शोध के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी, मूलभूत सुविधाओं का अभाव, सरकारी नीतियों एवं उनके क्रियान्वयन में व्याप्त उदासीनता, शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कार्य को दिया जाना है जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। इस समस्या से बचने के लिए सरकार को प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

- सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।
- सिवान जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010), *शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. अस्थाना, विपिन एवं अस्थाना श्वेता (2008), *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. आर्येन्दु, अखिलेश (2007), प्राथमिक शिक्षा और सरकारी कार्य योजना, *कुरूक्षेत्र,* वर्ष 30 अंक 11, पृष्ठ 10–12।
4. कौल, लोकेश (2009), *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली,* विकास पब्लिशिंग हाऊस प्राईवेट लिमिटेड, नोएडा, पृ. 76।
5. कुप्पूस्वामी, बी. (1976), *बाल व्यवहार और विकास,* विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., नई दिल्ली।
6. खन्ना (2011), *शैक्षिक उपलब्धि,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

––==00==––